

# باور صدايت

پديد آورنده

مينو رحمان نژاد

تهران

بهار ۹۵

|                         |                                             |
|-------------------------|---------------------------------------------|
| سرشناسه                 | : رحمان نژاد، مینو، ۱۳۵۸-                   |
| عنوان و نام پدید آورنده | : باور صدایت / پدید آورنده مینو رحمان نژاد. |
| مشخصات نشر              | : تهران: اکسیر اندیشه، ۱۳۹۵.                |
| مشخصات ظاهری            | : ۱۰۸ص.                                     |
| شابک                    | : ۹۷۸-۶۰۰-۹۶۳۹۸-۳-۰                         |
| وضعیت فهرست نویسی       | : فیپا                                      |
| موضوع                   | : شعر فارسی - قرن ۱۴                        |
| رده بندی کنگره          | : ۱۳۹۵ ب ۲ ۸۱۶۵ ح / PIR ۸۰۵۸                |
| رده بندی دیوبند         | : ۸۱۶۵ / ۶۲                                 |
| شماره کتابشناسی ملی     | : ۴۲۱۷۹۷۸                                   |



اکسیر اندیشه

انتشارات اکسیر اندیشه

پدید آورنده: مینو رحمان نژاد

چاپ: اول، اردیبهشت ۹۵

ناشر: انتشارات اکسیر اندیشه

تیراژ: ۱۰۰۰ جلد

طرح جلد: زهره رحمانی

حروفچین و صفحه آرا: سمیه خداویردی

آدرس: تهران - خیابان کارگر جنوبی، پایین تر از میدان رازی، خیابان رباط کریم اصلی، کوچه

تفنگچیان، پلاک ۳

حق چاپ برای ناشر محفوظ است.

|    |               |
|----|---------------|
| ۳۰ | شعاری         |
| ۳۱ | تایه ها       |
| ۳۲ | یوم نقاشی     |
| ۳۲ | همواره یار    |
| ۳۳ | پهانه         |
| ۳۴ | سقاوت زمین    |
| ۳۴ | دست در دست    |
| ۳۵ | ن             |
| ۳۵ | نصه           |
| ۳۶ | وزیدن         |
| ۳۶ | باز کش        |
| ۳۷ | دل تنگی       |
| ۳۷ | پناهگاه       |
| ۳۸ | صدافت         |
| ۳۸ | بایان         |
| ۳۹ | قطره          |
| ۳۹ | قیله          |
| ۴۰ | کلبه          |
| ۴۰ | فریاد         |
| ۴۱ | آرزو          |
| ۴۱ | بودن و نبودن  |
| ۴۲ | دانه ی مهر    |
| ۴۲ | وسفته         |
| ۴۲ | عشق و...      |
| ۴۳ | موسیقی و یاد  |
| ۴۴ | انتها         |
| ۴۴ | ماه کار       |
| ۴۵ | را بینه       |
| ۴۵ | شکوه ی دست    |
| ۴۶ | و...          |
| ۴۶ | روزگار و تو   |
| ۴۷ | باد و لحن     |
| ۴۷ | دوست دارم     |
| ۴۸ | لوب           |
| ۴۸ | سرنوشت        |
| ۴۹ | صدایت         |
| ۴۹ | چتر و باران   |
| ۵۰ | دست دل        |
| ۵۰ | بناه و سرنوشت |
| ۵۱ | بوج           |
| ۵۱ | آرامش         |
| ۵۲ | صدای آرزوها   |
| ۵۲ | دیوانگی       |
| ۵۳ | نوازش کلام    |
| ۵۳ | دلم           |
| ۵۴ | طوفان         |

|              |       |
|--------------|-------|
| فهرست        | ۱ - ۲ |
| فهرست        | ۳     |
| سختی         | ۴     |
| ردیاب        | ۴     |
| دلیا         | ۵     |
| سادگی        | ۵     |
| نیایش        | ۵     |
| بازل         | ۶     |
| صبر و وس     | ۷     |
| شیرین        | ۷     |
| دوره         | ۸     |
| د            | ۹     |
| دلیان        | ۱۰    |
| باز          | ۱۱    |
| دست آرز      | ۱۱    |
| می دانی      | ۱۲    |
| هیاهو        | ۱۲    |
| تکیه کلاه    | ۱۳    |
| نازکی نفس    | ۱۳    |
| احساس        | ۱۴    |
| هاون         | ۱۵    |
| موسیقی       | ۱۵    |
| فصله         | ۱۶    |
| دلیرم        | ۱۶    |
| خاطره        | ۱۷    |
| جاده         | ۱۷    |
| آسمان دل     | ۱۸    |
| قلب          | ۱۸    |
| خواستنت      | ۱۹    |
| یاد          | ۱۹    |
| بودنی زیبا   | ۲۰    |
| تایه ها      | ۲۰    |
| خوب و بد     | ۲۱    |
| آسمان آبی    | ۲۱    |
| پروانه       | ۲۲    |
| چشمه ی آرامش | ۲۲    |
| حیران        | ۲۲    |
| مسلم کلاه    | ۲۳    |
| کنارم باش    | ۲۴    |
| حواس         | ۲۵    |
| دستگیر       | ۲۶    |
| کلافه ی عشق  | ۲۷    |
| قلب دلیا     | ۲۸    |
| رنک          | ۲۸    |
| بودنت        | ۲۹    |
| حضور         | ۲۹    |

|     |                    |    |                  |
|-----|--------------------|----|------------------|
| ۸۰  | خستگي.....         | ۵۴ | باور دستاوت..... |
| ۸۱  | ناگفته ها.....     | ۵۵ | پرله.....        |
| ۸۲  | همراه.....         | ۵۵ | پايه.....        |
| ۸۳  | براي ارائه ۱.....  | ۵۶ | پل.....          |
| ۸۴  | براي ارائه ۲.....  | ۵۶ | تو.....          |
| ۸۵  | خيال.....          | ۵۷ | بهر ۱.....       |
| ۸۶  | خي.....            | ۵۸ | بهر ۲.....       |
| ۸۶  | پنج زندگي.....     | ۵۹ | بهر ۳.....       |
| ۸۷  | اير.....           | ۶۰ | عادر ۱.....      |
| ۸۷  | مرهم.....          | ۶۱ | عادر ۲.....      |
| ۸۸  | تمام.....          | ۶۲ | مسلا.....        |
| ۸۸  | هواي دل.....       | ۶۲ | آبلو.....        |
| ۸۹  | مريجه.....         | ۶۳ | دست خفا.....     |
| ۹۰  | دود.....           | ۶۳ | ريسمان.....      |
| ۹۱  | دوري.....          | ۶۴ | فالي.....        |
| ۹۲  | کوچ.....           | ۶۵ | پا.....          |
| ۹۳  | پاران صدايت.....   | ۶۵ | قد.....          |
| ۹۴  | گيسوت.....         | ۶۶ | نه مانده.....    |
| ۹۵  | دستان خيالت.....   | ۶۷ | دستان پرباز..... |
| ۹۵  | پرواز کودگي.....   | ۶۸ | حسادت يافته..... |
| ۹۶  | پانويسي تو.....    | ۶۸ | بشراري.....      |
| ۹۷  | مداد.....          | ۶۹ | برواي دل.....    |
| ۹۸  | انگشت کودگانه..... | ۶۹ | نوفتم.....       |
| ۹۹  | چاي و استکان.....  | ۷۰ | نقاش.....        |
| ۹۹  | قلم.....           | ۷۰ | سر ماهه.....     |
| ۱۰۰ | تقرين.....         | ۷۱ | بهار.....        |
| ۱۰۰ | ساعت.....          | ۷۱ | بهر جوان.....    |
| ۱۰۱ | ما.....            | ۷۲ | آبرو.....        |
| ۱۰۲ | ودگي.....          | ۷۲ | شب جله.....      |
| ۱۰۳ | آينه.....          | ۷۳ | کودگانه ۱.....   |
| ۱۰۴ | چهره.....          | ۷۳ | کودگانه ۲.....   |
| ۱۰۵ | انسان پوس.....     | ۷۴ | کل يا پوچ.....   |
| ۱۰۶ | مهر.....           | ۷۵ | دستان تو.....    |
| ۱۰۷ | زيبترين آشت.....   | ۷۶ | بهار.....        |
| ۱۰۸ | باور.....          | ۷۷ | نويسنده.....     |
|     |                    | ۷۸ | سبز سبز.....     |
|     |                    | ۷۸ | دل مر دگي.....   |
|     |                    | ۷۹ | سايه.....        |

## سخني چند....

گاه كه دل هواي گفتن داشت، شايد نمي توانستم بگويم و قلم تنها همراه زندگي ام مي شد، در خوشي و ناخوشي ها، دل آشوبه ها و آرامش ها ومن تنها مي نوشتم، تنها براي دلم، براي آرامشم؛ گردش روزگار بخيد، زمانه زماني داد براي چاپ دل نوشته هايي كه شايد هيچ گاه به ماندگاري اش تا به اين حد نمي انديشيدم؛ زمان كه رخصت داد، همت گردآوري تيز افزون شد؛ بي هيچ اصلاح و ويرايشي، هرچند به گفته ي دوستان، حال كه قصد چاپ دل نوشته هايم را دارم بهتر بود ويرايش شوند، ولي هر كلام اين كتاب طره استر يا دگار، و حال مي توان خاطره را بازسازي كرد؟ پس دوست داشتم با تمام كاستي ها و نقصان ها سعله شده از اعماق احساسم باشد، تا خوانندگان چه بگويند و چه بياندishند، نمي دانم؟ كه راي خوانندگان براي آزرشي بس عظيم دارد، اميدوارم دل نوشته هايم با تمام كمبودها و ايرادها به دل خوانندگان نرسيدن به هيچ آرزويي والاتر و ارزشمندتر از اين براي هيچ اهل قلمي نيست، باشد كه هرچند کوتاه سما را به زماني روزي، خاطره اي و لحظه اي از زندگيتان برده باشد و يادآور خاطره اي از لحظه هاي زندگيتان باش

سريلند باشيد و يبروز

مينو رحمان نژاد

اردبېهشت ۹۵